❍ 14 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *साइलेंस में रहे ?*

➢➢ *अपना सब कुछ बाप हवाले किया ?*

➢➢ *बाप द्वारा प्राप्त हुए सर्व खजानों को कार्य में लगाया ?*

➢➢ *स्वभाव और विचारों में अंतर होते हुए भी स्नेह में अंतर तो नहीं आया ?*

————————————————————

✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

〰✧ *सबसे तीव्रगति की सेवा है-'वृत्ति द्वारा वायब्रेशन फैलाना'। वृत्ति बहुत तीव्र राकेट से भी तेज है।* वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकते हो। जहाँ चाहो, जितनी आत्माओं के प्रति चाहो वृत्ति द्वारा यहाँ बैठे-बैठे पहुंच सकते हो। *वृत्ति द्वारा दृष्टि और सृष्टि परिवर्तन कर सकते हो। सिर्फ वृत्ति में सर्व के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना हो।*

✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

───────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं बालक सो मालिक हूँ"*

〰✧ डबल नशा रहता है कि मैं श्रेष्ठ आत्मा मालिक भी हूँ और फिर बालक भी हूँ? एक है मालिकपन का रूहानी नशा और दूसरा है बालकपन का रूहानी नशा। यह डबल नशा सदा रहता है या कभी-कभी रहता है? 'बालक' सदा हो या कभीकभी हो? *बालक सदा बालक ही है ना। परमात्म-बालक हैं और फिर सारे आदि-मध्य-अन्त को जानने वाले मालिक हैं। तो ऐसा मालिकपन और ऐसा बालकपन सारे कल्प में और कोई समय नहीं रह सकता।*

〰✧ सतयुग में भी परमात्म-बच्चे नहीं कहेंगे, देवात्माओंके बच्चे हो जायेंगे। *तीनों कालों को जानने वाले मालिक-यह मालिकपन भी इस समय ही रहता है। तो जब इस समय ही है, बाद में मर्ज हो जायेगा, तो सदा रहना चाहिए ना। डबल नशा रखो। इस डबल नशे से डबल प्राप्ति होगी मालिकपन से अपनी अनुभूति होती है और बालकपन के नशे से अपनी प्राप्ति।* भिन्न-भिन्न प्राप्तिया हैं ना। यह रूहानी नशा नुकसान वाला नहीं है। रूहानी है ना। देहभान के नशे नुकसान में लाते हैं। वो नशे भी अनेक हैं। देहभान के कितने नशे हैं? बहुत हैं ना-मैं यह हूँ, मैं यह हूँ, मैं यह हूँ.......। लेकिन सभी हैं नुकसान देने वाले, नीचे लाने वाले।

~✧ यह रूहानी नशा ऊंचा ले जाता है, इसलिए नुकसान नहीं है। हैं ही बाप के। तो बाप कहने से बचपन याद आता है ना। बाप अर्थात् मैं बच्चा हूँ तभी बाप कहते हैं। तो सारा दिन क्या याद रहता है? 'मेरा बाबा'। या और कुछ याद रहता है? 'बाबा' कहने वाला कौन? बच्चा हुआ ना। तो सदा बच्चे हैं और सदा ही रहेंगे। सदा इस भाग्य को सामने रखो अर्थात् स्मृति में रखो-कौन हूँ, किसका हूँ और क्या मिला है! क्या मिला है-उसकी कितनी लम्बी लिस्ट है! लिस्ट को याद करते हो या सिर्फ कॉपी में रखते हो? कॉपी में तो सबके पास होगा लेकिन बुद्धि में इमर्ज हो-मैं कौन? तो कितने उत्तर आयेंगे? बहुत उत्तर हैं ना। उत्तर देने में, लिस्ट बताने में तो होशियार हो ना। *अब सिर्फ स्मृतिस्वरूप बनो। स्मृति आने से सहज ही जैसी स्मृति वैसी स्थिति हो जाती है।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

───────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

~✧ बापदादा आपस में बोले कि अशरीरी आत्मा को अशरीरी बनने में मेहनत क्यों? ब्रहमा बाप बोले - '*84 जन्म चोला धारण कर पार्ट बजाने के कारण पार्ट बजाते-बजाते शरीरधारी बन जाते हैं।*' शिव बाप बोले - ‘पार्ट बजाया लेकिन अब समय कौन-सा है? समय की स्मृति प्रमाण कर्म भी स्वतः ही वैसे होता है। यह तो अभ्यास है ना?’

﹏✧ बाप बोले - “*अब पार्ट समाप्त कर घर जाना है।* पार्ट की ड्रेस तो छोडनी पडेगी ना? घर जाना है तो भी *यह पुराना शरीर छोडना पडेगा,* राज्य में अर्थात स्वर्ग में जाना है तो भी यह पुरानी ड्रेस छोडनी पडेगी।

﹏✧ तो जब *जाना ही है तो भूलना मुश्किल क्यों?* जाना है, क्या यह भूल जाते हो? आप सभी तो जाने के लिए एवररेडी हो ना कि अब भी कुछ रस्सियाँ बँधी हुई हैं? एवररेडी हो ना?’

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

───────────────────────

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

﹏✧ 'बिन्दु' शब्द ही कमाल का शब्द है। जादू का शब्द है। *बिन्दु बनो और आर्डर करो तो सब तैयार है। संकल्प की ताली बजाओ और सब तैयार हो जायेगा। लेकिन बिन्दु की ताली प्रकृति भी सुनेगी, सर्व कर्मइन्द्रियाँ भी सुनेंगी और सर्वसाथी भी सुनेंगे। बिन्दु बन करके ताली बजाने आती है?*

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ ° ••☆••✧˚ °

———————————————

∬6∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- एक बाप से योग लगाना"*

➳ _ ➳ स्थूल जगत में कार्य करते हुए सहसा मन... मीठे बाबा के मिलन को मचल उठा और मै आत्मा प्रकाशमय काया में सूक्ष्म वतन पहुंची... ब्रहमा तन में शिव पिता मेरे स्वागत को आतुर खड़े है... मै आत्मा मीठे बाबा के करीब जा रही हूँ... और उधर से बाबा मेरे करीब आ रहे है... जितनी दीवानगी मुझ आत्मा में है मीठे बाबा भी मेरे बिना अधूरे अधूरे से है... मुझे देखते ही उनके चेहरे पर स्नेहिल मुस्कान सज गयी... *मुझे प्रेम रश्मियों में डुबोकर, वरदानों की बौछार में भिगोने लगे.*..

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को असीम प्यार से भरते हुए कहने लगे :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... सब जगह से स्वयं को समेटकर ईश्वरीय यादो में सांसो और संकल्प को लगाओ... *यह यादे ही सच्चे सुखो की नगरी में मालिक सा सजायेंगी.*.. देह के रिश्ते तो ठगकर खोखला बनायेगे... सिर्फ मीठे बाबा की यादे ही सुनहरे सुख दिलायेगी..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने बाबा को मुझ आत्मा के लिए इस कदर प्यार दुलार देख कहती हूँ :-* "मीठे बाबा मुझ आत्मा ने प्रेम को... इस धरती पर रिश्तो में कितना ढूंढा... पर एक बून्द भी पा न स्की... प्यारे बाबा आपने प्रेम सागर में भिगो कर... मुझे सदा का तृप्त कर दिया है... *सच्चे प्यार से मेरा अंतर्मन भर दिया है.*.."

❈ *प्यारे बाबा मुझ आत्मा के प्रेम प्याले को और भी सिक्त करते हुए बोले :-* " मीठे लाडले बच्चे... *आप बच्चों के सुखो की खातिर ही तो धरती पर आ बेठा हूँ..*. मेरी यादो में सदा के लिए डूब जाओ... देह के भान और रिश्तो से निकल ईश्वरीय यादो को जीवन का आधार बनाओ... तो असीम सुख बाँहों में मुस्करायेंगे..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा को दिल से वादा करते हुए कहती हूँ :-* "हाँ प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा अब आपको ही चाहूंगी और प्यार करूंगी... आप ही मेरा अब संसार हो... दुनियावी संसार तो मै आत्मा कब का भूल चली... *ईश्वरीय यादो में हर पल जीना और आपकी पुरी में आना ही अब जीवन का लक्ष्य है.*.."

❈ *मीठे प्यारे बाबा मेरी बुद्धि रुपी दामन में ज्ञान रत्नों को सजाते हुए बोले :-* "मीठे सिकीलधे बच्चे... देह का भान और दैहिक रिश्ते में सुख रेतीले मरुस्थल में बून्द जैसा है...इन क्षणिक सुखो को सच्चा सुख न मानो... सिर्फ मीठे बाबा की यादो में सच्चे सुख समाये है... *इन यादो में गहरे डूबकर, सच्चे सुखो के अधिकारी बन मुस्कराओ.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा की बातो में गहरे डूबकर अतीन्द्रिय सुख में खो गयी और बोली :-* "मीठे बाबा भगवान मुझे यू संवार रहा है... मुझे अपने से प्यार करना सिखा रहा है... *सच्चे सुखो की दुनिया में बिठा रहा है*... ऐसा प्यारा भाग्य पाने वाली मै सोभाग्यशाली आत्मा हूँ... आपकी यादो के गहरे सुख में डूबी हुई हूँ... यूँ अपना प्यार बाबा पर उंडेल कर, मै आत्मा अपने देह में लौट आयी..."

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✵ *"ड्रिल :- अपने असली स्वधर्म में टिक अशरीरी बन बाबा को याद करना है*"

➳ _ ➳ देह और देह की दुनिया से किनारा कर, अपने वास्तविक स्वरुप को मैं जैसे ही समृति में लाती हूं। मुझे अनुभव होता है जैसे यह देह अलग है और इस देह में विराजमान मैं आत्मा अलग हूं। *मन बुद्धि रूपी नेत्रों से मैं स्पष्ट देख रही हूं इस देह में भृकुटि सिंहासन पर विराजमान उस चैतन्य दीपक को जो इस शरीर रूपी मंदिर में जगमगा रहा है*। इस देह को चलाने वाली मैं चैतन्य शक्ति हूं। यह समृति मुझे सहज ही अपने वास्तविक स्वरुप में स्थित कर देती है। अपने सत्य स्वरुप में स्थित होते ही मुझ आत्मा के अंदर निहित गुण और शक्तियां स्वत: ही इमर्ज होने लगते हैं। *शांति, प्रेम, सुख, आनंद, पवित्रता, ज्ञान और शक्ति यही मुझे आत्मा के गुण हैं*। यही मेरा स्वधर्म है।

➳ _ ➳ अपने स्वधर्म में स्थित होते ही अब मैं गहन शांति का अनुभव कर रही हूँ। शांति और सुख से भरपूर इस अवस्था में मेरी सर्व कर्मेन्द्रियां शांत और शीतल होती जा रही हैं । मेरे विचार शांत हो रहे हैं। और इस गहन शांति की अवस्था में मैं आत्मा अशरीरी बन इस देह से निकलकर अपने घर शांति धाम की ओर चल पड़ती हूं। *मन बुद्धि रूपी नेत्रों से इस साकार दुनिया के, प्रकृति के सुंदर- सुंदर नजारों को देखती हुई अपने पिता परमात्मा के प्रेम में मगन उनसे मिलन मनाने की तीव्र लग्न में मैं आत्मा एक आंतरिक यात्रा पर निरंतर बढ़ती जा रही हूं*। साकार लोक को पार कर, सूक्षम लोक को भी पार कर, मैं आत्मा पहुंच गई ब्रह्मलोक अपने शिव पिता परमात्मा के पास।

➳ _ ➳ मन बुद्धि रूपी दिव्य नेत्रों से अब मैं आत्मा स्पष्ट देख रही हूं ब्रह्मलोक का दिव्य आलौकिक नजारा। चारों और चमकती हुई मणिया लाल प्रकाश से प्रकाशित इस लोक में दिखाई दे रही है। शांति के शक्तिशाली वायब्रेशन पूरे ब्रह्मलोक में फैले हुए हैं। *शांति की गहन अनुभूति करते-करते मैं इस अंतहीन ब्रह्माण्ड में विचरण रही हूं। विचरण करते करते मैं पहुंच जाती हूं शांति के सागर अपने शिव पिता परमात्मा के पास जिनसे निकल रहे शांति के

शक्तिशाली वायब्रेशन पूरे ब्रह्मांड में फैल रहें हैं* और मुझे अपनी और खींच रहें हैं। इनके आकर्षण में आकर्षित हो कर मैं आत्मा पहुंच जाती हूँ अपने शिव पिता के बिल्कुल समीप और जा कर उनके साथ कम्बाइंड हो जाती हूं।

➾ _ ➾ बाबा के साथ कम्बाइंड होते ही ऐसा आभास होता है जैसे सर्व शक्तियों के सागर में मैं आत्मा डुबकी लगा रही हूं। बाबा से निकल रही सर्वशक्तियों रूपी सतरंगी किरणों का झरना मुझ आत्मा पर बरस रहा हैं। मैं असीम आनन्द का अनुभव कर रही हूँ। *एक अलौकिक दिव्यता से मैं आत्मा भरपूर होती जा रही हूँ। प्यार के सागर बाबा अपना असीम प्यार मुझ पर लुटा रहे हैं*। उनके प्यार की शीतल किरणे मुझे भी उनके समान मास्टर प्यार का सागर बना रही हैं। बाबा की सर्वशक्तियों को स्वयं में समाकर मैं शक्तियों का पुंज बनती जा रही हूँ। लाइट माइट स्वरूप में स्थित हो कर मैं मास्टर बीजरूप स्थिति का अनुभव कर रही हूँ।

➾ _ ➾ मास्टर बीजरूप स्थिति में स्थित हो, गहन अतीन्द्रीय सुख की अनुभूति करके मैं लौट आती हूँ साकारी लोक में और अपनी साकारी देह में आ कर फिर से भृकुटि सिहांसन पर विराजमान हो जाती हूँ किन्तु अब देह का कोई भी आकर्षण मुझे अपनी ओर आकर्षित नही कर रहा। *देह में रहते भी अशरीरी बन अपने पिता परमात्मा के साथ मनाये रूहानी मिलन के आलौकिक नजारे को स्मृति मुझे रुहानी नशे से भरपूर कर रही है*। मुझे मेरा यह स्वरूप बहुत ही न्यारा और प्यारा दिखाई दे रहा है । देह और देही दोनों अलग - अलग स्पष्ट दिखाई दे रहें हैं । देह में रहते देह से न्यारे हो कर रहने का दिव्य अलौकिक आनन्द अब मैं अनुभव कर रही हूँ।

➾ _ ➾ इस दिव्य आलौकिक आनन्द की अनुभूति सदैव मैं आत्मा करती रहूं इसके लिए मैं स्वयं से प्रोमिस करती हूँ कि अब अपने मन बुद्धि को देह और देह के सम्बन्धों में कभी भी लटकने नही दूंगी। *अपने स्वधर्म में स्थित हो अशरीरी बन मन बुद्धि को केवल बाबा की याद में लगा कर इस स्मृति के साथ इस देह में रहंगी कि मैं आत्मा अशरीरी आई थी और अशरीरी बन कर ही

मुझे वापिस अपने धाम अपने शिव पिता के पास लौटना है*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

❋ *मैं बाप द्वारा प्राप्त हुए सर्व खजानों को कार्य मे लगाकर बढ़ाने वाली आत्मा हूँ।*
❋ *मैं ज्ञानी आत्मा हूँ।*
❋ *मैं योगी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

❋ *स्वभाव और विचारों में अन्तर होते हुए भी स्नेह में अन्तर होने से मैं आत्मा सदैव मुक्त हूँ ।*
❋ *मैं सदा स्नेही आत्मा हूँ ।*
❋ *मै सच्ची सेवाधारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)

(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बापदादा ऐसे आदि रत्नों को लाख-लाख बधाईयाँ देते हैं क्योंकि आदि से सहन कर स्थापना के कार्य को साकार स्वरूप में वृद्धि को प्राप्त कराने के निमित्त बने हो। तो जो स्थापना के कार्य में सहन किया वह औरों ने नहीं किया है। *आपके सहनशक्ति के बीज ने यह फल पैदा किये हैं। तो बापदादा आदि-मध्य- अन्त को देखते हैं - कि हरेक ने क्या-क्या सहन किया है और कैसे शक्ति रूप दिखाया है। और सहन भी खेल-खेल में किया।* सहन के रूप में सहन नहीं किया, खेल-खेल में सहन का पार्ट बजाने के निमित्त बन अपना विशेष हीरो पार्ट नूँध लिया। इसलिए आदि रत्नों का यह निमित्त बनने का पार्ट बापदादा के सामने रहता है। और इसके फलस्वरूप आप सर्व आत्मायें सदा अमर हो। समझा अपना पार्ट? कितना भी कोई आगे चला जाये - लेकिन फिर भी... फिर भी कहेंगे। बापदादा को पुरानी वस्तु की वैल्यु का पता है।

✺ *"ड्रिल :- खेल खेल में सहन करने का पार्ट बजाना"*

➳ _ ➳ वर्षा ऋतु आने पर चारों तरफ फूल ही फूल खिल रहे हैं हरियाली छा रही है... यह प्रकृति बहुत ही मनमोहक लग रही है... इस दृश्य को देखकर मेरा मन अति आनंदित हो रहा है... जैसे ही वर्षा प्रारंभ होती है, मैं इस वर्षा ऋतु का आनंद लेने के लिए घर से बाहर आ जाती हूं और हरे भरे खेतों की तरफ दौड़ने लगती हूँ... बारिश में नहाते हुए मैं ऐसे स्थान पर आ पहुँचती हूँ... *जहां फूल ही फूल खिल रहे हैं और ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो इन फूलों को प्रकृति नहलाने आई हो... इसी दौरान मैं खिले हुए फूलों से बातें करने लगती हूं... और मैं उन फूलों से कहती हूं, तुम कितने सुंदर प्रतीत हो रहे हो... तुम्हें ऐसा कौन बनाता है...* जिससे तुम सबके दिलों को वश में कर लेते हो और उनके दिल पर राज करते हो...

➳ _ ➳ तभी उन फूलों में से कुछ फूल मुझे कहते हैं कि हम बहुत कुछ सहन करने पर ऐसे खिले हुए फूल बनते हैं... फिर वह फूल मुझे कहते हैं कि

आओ हम तुम्हें अपना राज बताते हैं जिससे हम सबके दिलों पर राज करते हैं... वह फूल मेरे आगे और मैं उनके पीछे पीछे चलने लगती हूं... और मुझे एक ऐसे स्थान पर ले आते हैं जहां एक किसान अपने खेत में बीज बो रहा होता है और मुझे यह दृश्य दिखाकर कहने लगते हैं... कि इस किसान को देख तुम्हें कैसा प्रतीत होता है, यह किसान अपने खेत में इन बीजों को कुछ इस तरह से डाल रहा है कि यह बड़े होकर हमें फूल फल दे सके... *उसने अपना कर्तव्य करके छोड़ दिया बाकी अब सारा कार्यभार इन बीजों पर आ जाता है कि उन्हें अब आगे अपना कर्तव्य किस प्रकार निभाना है...*

➳ _ ➳ फिर वह फूल मुझे कहते हैं कि आप इन बीजों को देखो कैसे यह मिट्टी में रहकर अपना बलिदान देते हैं और अपने आप को इस मिट्टी में छुपा कर रखते हैं... फिर यह कुछ दिनों तक इस मिट्टी में इसी प्रकार दबे रहते हैं और फिर कुछ दिनों बाद यह मिट्टी से अंकुरित होकर बाहर निकलने लगते हैं तो इन्हें सबसे पहले सूर्य की किरणों का सामना करना पड़ता है... ताकि यह सूर्य की तेज किरणों का सामना करके एक पौधे का निर्माण कर सकें... इसके बाद इन्हें तेज धूप और तेज हवाओं का सामना करना पड़ता है... तेज हवाएं इन्हें अपनी मंजिल से भटकाने की पूरी कोशिश करते हैं... परंतु ये *मिट्टी में रहकर अपनी जड़ें इतनी मजबूत कर लेते हैं कि इनका तेज हवा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती... और फिर तेज हवा को सहन करते-करते इसे अपनी आदत बना लेते हैं जिससे वह अपने आने वाले सुन्दर भविष्य का निर्माण करते हैं... तेज धूप से निडर होकर यह इस धूप को अपना साथी बना लेते हैं...*

➳ _ ➳ और यह इस तरह इन प्रकृति रुपी कठिनाइयों का सामना कर लेते हैं और इन्हें अपना साथी बना लेते हैं... और यह एक मजबूत पौधे बन जाते हैं और धीरे-धीरे इनकी डालियों से कलियां निकलने लगती है... और उन कलियों से फिर रंग बिरंगे फूल खिलने लगते हैं... जिसे देखकर सभी अति आनंदित हो उठते है... जब फूलों ने मुझे यह दृश्य दिखाया तो मुझे भी सब समझ आने लगता है... और मैं उन फूलों को कहने लगती कि कैसे *इन छोटी छोटी कठिनायों का डटकर सामना करने से तुम्हारा निर्माण हुआ है... ऐसे ही मैं भी अपने पुरुषार्थ से उज्जवल भविष्य का निर्माण करूंगी...* इतना कहकर मैं बारिश में नहाती हुई आगे की ओर चल पडती हूं और ठंडी ठंडी बारिश की

फुहारों का आनंद लेती हूं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा परमात्मा की याद में बैठती हूँ... परमात्मा से शक्तियों को ग्रहण कर अपनी स्थिति को और भी मजबूत बना रही हूँ... जो भी परिस्थितियां आती हैं, मैं आत्मा परिस्थिति का चिंतन नहीं करती हूँ बल्कि परमात्म चिंतन में रहकर.. सहन शक्ति के द्वारा, परिस्थिति को आगे बढ़ने का साधन समझ खेल-खेल में पार कर लेती हूँ... यह परिस्थिति मुझे और भी मजबूत बनाने आई है... इसलिए इन छोटी-छोटी परेशानियों का चिंतन करके और बड़ी परेशानी नहीं बनाती हूँ... *बल्कि शक्ति स्वरूप बन खेल-खेल में सहन करने का पार्ट बजाती हूँ... और ड्रामा में अपना विशेष हीरो पार्ट नूँध रही हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔